50
गणतंत्र REPUBLIC

कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र

कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र भारत के हरियाणा प्रदेश के प्राचीन ऐतिहासिक नगर कुरुक्षेत्र में स्थित अनोखा विज्ञान केन्द्र है। मनोहर स्थापत्य और परिवेश के बीच एक बेलनाकार ऊँचे भवन में स्थित इस केन्द्र का प्रधान आकर्षण कुरुक्षेत्र युद्ध का सजीव दिखता विराट् दृश्य है। बेलनाकार हॉल के बीचों-बीच खड़े होने पर आपको अनुभव होगा कि आपकी आँखों के सामने महाभारत के कौरवों और पांडवों के बीच हुए 18 दिनों के युद्ध का 34 फीट ऊँचा चित्र सजीव हो उठा है। इससे मिली हुई युद्ध भूमि की एक डायोरमा चित्रावली है जो उस भीषण नरसंहार का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करती है। गीता के श्लोकों का गायन और दूर से आती हुई युद्ध-निनाद प्रकाशीय दृष्टिभ्रम के साथ पूरे परिवेश की सृष्टि करते हैं।

इसके समर्थन और संपूरन के लिए हमारी भूमि के भूवैज्ञानिक क्रमविकास, प्राचीन भारत के भूगोल तथा महाभारत महाकाव्य के प्रधान चरित्रों के प्रदर्श है। दीर्घा में रखे कम्प्यूटर पर आधारित प्रदर्श आपको अस्त्रों की गहनता, युद्ध की रचनाओं (व्यूहों) अथवा सूर्यग्रहण जैसी घटनाओं की प्राचीन लोगों द्वारा व्याख्या को दर्शाते हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय विरासत का लम्बा इतिहास 4500 वर्षों का है। कालांतर में कला और साहित्य के साथ-साथ भारतवर्ष में बहुत उच्च प्रकार का वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय संवर्धन हुआ। विद्यमान पांडुलिपियों से यह सिद्ध होता है कि भारतीय गणितज्ञों और खगोलविदों की उपलब्धियाँ काफी उन्नत थी।

भारतीय चिकित्सकों ने भी देशी जड़ी-बूटियों की सम्पदा का व्यवहार करके ऐसे प्रभावशाली प्रतिकारक तैयार किए जिससे औषधि की धारणा में क्रांति उत्पन्न हो गई। रसायन शास्त्र, धातुकर्म, भौतिक विज्ञान, नगर योजना, वास्तुकला आदि में हुए विकास ने विश्व को अभिभूत कर दिया तथा आनेवाली पीढ़ी के लिए अमूल्य विरासत तैयार कर दी।

विज्ञान केन्द्र के नीचले तल पर एक प्रदर्शनी लगाई गई है जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय परंपरा को दर्शाया गया है।

आमोद-प्रमोद विज्ञान अनुभाग के प्रदर्श आपको इनसे खिलवाड़ करने और साधारण वैज्ञानिक क्रियाओं के 'कैसे' और 'क्यों' का पता लगाने का निमंत्रण देते हैं। गेंद को लुढ़काएँ, स्वीच दबाएँ, क्रैंक को घुमाएँ जिससे चमत्कार सा लगने वाला कोई काम होता है लेकिन वैज्ञानिक तरीके से। स्पष्टतया ये प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध काम करते लगेंगे फिर भी ये हमें इस बहुमुखी विश्व में नियमों के भीतर नियमों से परिचित होने की शिक्षा देते हैं।

विश्वरूप - अनेकता में एकता एवं एकता में अनेकता। परिस्थिति विज्ञान के विभिन्न पहलूओं के परस्पर सम्बन्ध को दिखाने तथा उनमें एकत्व की भावना पैदा करने के लिए 24 फलकोंवाली यह प्रदर्शनी लगाई गई है। विभिन्न प्रकार की प्रजातियों का परस्पर सम्बंध तथा क्रमिक विकास की समस्त प्रक्रिया को देखकर हम में विश्वरूप - प्रत्येक वस्तु में एक ही पहचान की भावना पैदा होती है।

केन्द्र में ऐसी सुविधाएँ भी है जहाँ छोटे शिशु रचनात्मक प्रकल्प पर काम कर सकते हैं, विज्ञान संगोष्ठियों के माध्यम से वैज्ञानिक विषयों पर अपने विचार प्रकट कर सकते हैं, या विज्ञान मेलों में अपने उपकरण प्रस्तुत कर सकते हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय विरासत

ई पू 2500	ई पू 2000	ई पू 1500	ई पू 1200	ई पू 1000	ई पू 600	ई पू 500	ई पू 400	सन् 100	सन् 200	सन् 300	सन् 400	सन् 500
सिंधुघाटी सभ्यता विकसित हुई।	समुद्र यात्रा के जहाजों का व्यवहार शुरु हुआ।	आर्य सभ्यता का आरंभ।	अत्रांजिखेर में सबसे पहले लोहे का पता लगा।	सुल्ब सूत्र की रचना हुई। चान्द्र खानों के धारणा का विकास।	पाइ का मान निश्चित हुआ। सुल्ब सूत्र में पाइथोगोरीय प्रमेय। वैशेषिक परमाणुवाद का विकास।	भारतवर्ष में लौह युग की स्थापना।	ब्रूसिबल इस्पात का निर्माण।	चरक संहिता की रचना।	सुश्रुत संहिता की रचना। भारत द्वारा इस्पात का निर्यात।	वक्षाली पांडुलिपि से 'शून्य' प्रतीक का पता लगना।	दिल्ली का मोर्चारोधी लौह स्तंभ।	कीमिया का प्रारंभ। दशमलव के स्थानीय मान की शुरुआत। आर्यभट्ट की कृतियाँ।

सन् 700	सन् 1200	सन् 1500	सन् 1726	सन् 1853	सन् 1896	सन् 1930	सन् 1947	सन् 1953	सन् 1969	सन् 1975	सन् 1986	सन् 1991	सन् 1997
आयुर्वेदिक ग्रन्थ अष्टांग हृदय की रचना।	भारत में कागज का आगमन। घातव रकाब की शुरुआत।	जस्ता को गलाने की प्रक्रिया की पहले से जानकारी।	यन्तर-मन्तर का निर्माण।	भारतवर्ष में रेलवे का आगमन।	जे.सी.बोस द्वारा बेतार परेषण का आविष्कार।	सी.वी.रमण को भौतिकी में नोबल पुरस्कार प्राप्त।	भारतवर्ष स्वाधीन हुआ।	भारत में नाभिकीय ईंधन तैयार किया गया।	हरित क्रान्ति की सफल उपलब्धि।	भारत का उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजा गया।	भारत ने अंटार्कटिका में अपना स्थायी स्टेशन स्थापित किया।	भारत ने सुपर कम्प्यूटर बनाया।	भारत ने पी एस एल वी सी-1 राकेट छोड़ा।

सन् 1998 : भारत ने ताप-नाभिकीय क्षमता प्राप्त की।

सन् 1999 : इनसैट-2ई और पी एस एल वी सी-2 का उत्क्षेपन किया गया। आई आर एस पी-4 को कक्षपथ में स्थापित किया गया।

इस केन्द्र का तारामंडल आपको क्षण भर में कुरूक्षेत्र के रात्रिकालीन आकाश को दिखा देगा।

हॉल के बाहर खुले में हरा-भरा **विज्ञान उद्यान** है जहाँ परवलीय परावर्तक आपकी फुसफुसाहट को बहुत दूर तक पहुँचाता है, खोखले पाइप से संगीत का सुर निकलता है और इसी तरह की अन्य क्रियाएँ होती हैं।

यह सब आकर्षण आपको अपने परिवार के साथ इस केन्द्र में आने के लिए आमंत्रित करते हैं। यहाँ शिक्षण और आनन्द दोनों मिलकर आपका स्वागत करेंगे।

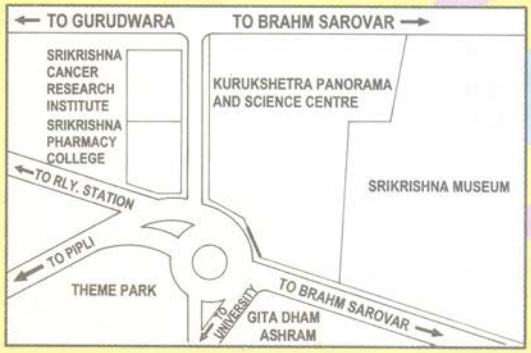

सोमवार, होली और दीपावली के दिनों को छोड़कर यह केन्द्र प्रतिदिन सुबह 10.00 बजे से 5.30 बजे तक खुला रहता है।

कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केन्द्र

पिहोवा रोड, कुरुक्षेत्र - 136 118
हरियाणा
दूरभाष : 26100